Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 GISRRJ | Volume 1 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

राजनीतिक विचारधारा : एक अध्ययन

डॉ0 रविन्द्र कुमार
एम.ए., पीएच.डी. (राजनीति विज्ञान)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

विचार और विचारधारा का जन्म शून्य में नहीं होता है, उसका संबंध मानव तथा उसके सामाजिक परिवेश से होता है। मानव एक सामाजिक प्राणी होने के साथ–साथ विवेकशील प्राणी भी है। उसमें बुद्धि तत्व के साथ–साथ भावना तत्व भी होता है। उसकी अपने सामाजिक वातावरण में निरंतर अन्तःक्रिया होती रहती है। इसी अन्तःक्रिया के फलस्वरूप विचार एवं विचारधाराएँ जन्म लेती है। प्रमुख विचारक अपने विचारों को या तो स्वयं ही किसी विशेष विचारधारा का नाम दे देते हैं अथवा उनके अनुयायी उनके विचारों की विचारधारा का अवरण पहना देते हैं। जैसे महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा और नैतिक साधनों पर आधारित चिन्तन को उनके अनुयायियों ने गांधीवाद की संज्ञा दी तथा कार्ल मार्क्स के वर्ग संघर्ष और सामाजिक–आर्थिक न्याय पर आधारित चिन्तन को वैज्ञानिक समाजवाद या मार्क्सवाद का नाम दिया।

प्रो.सी.बी. मेक्फर्सन लिखते हैं, ‘‘विचारधारा का अस्तित्व प्राचीनकाल में भी था, लेकिन विचारधारा शब्द का अधिक प्रचलन वर्तमान समय में ही हुआ है। वर्तमान समय में विचारधाराओं में जन–आंदोलन की प्रेरणा दी है।’’ वर्तमान में विचारधाराओं के युग का आरंभ 18वीं सदी में फ्रांसीसी राज्य क्रांति से माना जाता है। एम. वाटकिन्स के शब्दों में, ‘‘विगत दो शताब्दियों से पाश्चात्य जगत् अशांति के काल में रह रहा है, जिसे विचारधाराओं का युग कहा जा सकता है।’’ बीसवीं सदी के नवें दशक तक तो स्थिति यह थी कि समस्त राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विवादों तथा संघर्षों का विश्लेषण विचारधारा के आधार पर किया जा रहा था। कुछ विचारधाराओं में तो परस्पर प्रबल मतभेद की स्थिति थी और ऐसा माना जाता था कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का तो समस्त घटनाचक्र पूंजीवाद बनाम साम्यवादी विचारधारा के आपसी संघर्ष का परिणाम है।

डेनियल बेल के मतानुसार, ‘‘विचारधारा का अर्थ विचारों का समाज में प्रभाव उत्पन्न करने वाले साधनों में रूपान्तरित करना है। एक विचारक के लिए सत्य उसके कार्य में निहित रहता है।’’

इस प्रकार विचारधारा का कोई एक निश्चित और स्पष्ट अर्थ नहीं है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि विचारधारा विचारों का विज्ञान है जो मानव स्वभाव और सामाजिक परिवर्तनों का व्याख्या करती है, और भविष्य में आदर्श समाज की व्यवस्था तथा उस व्यवस्था की प्राप्ति के लिए साधन–पद्धतियों का भी वर्णन करती है।

राजनीतिक विचारधारा की प्रकृति :

- आधुनिक युग में विचारधारा का युग फ्रांसीसी राज्य क्रांति (1789) से प्रारंभ होता है। इस क्रांति ने विश्व को सर्वप्रथम समानता, स्वतंत्रता भ्रातृत्व, राष्ट्रवाद और लोकतंत्र का संदेश दिया।
- विचार और विचारधाराओं की उत्त्पति मानव और उसके सामाजिक पर्यावरण में अन्तःक्रिया के कारण होती है। विचारों का जन्म तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक मूल्यों और संरचनाओं के औचित्य की व्याख्या करने के लिए होता है अथवा प्रचलित राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था एवं मूल्यों के परिवर्तन के लिए होता है। जैसे– व्यक्तिवाद और पूंजीवाद को साधारणतया परिवर्तन विरोधी तथा समाजवाद को परिवर्तनवादी विचारधारा माना जाता है।
- कोई भी राजनीतिक विचारधारा सम्पूर्ण रूप से पूर्ण सत्य को अभिव्यक्त नहीं करती है। वस्तुतः कोई भी विचारधारा अपने आप में पूर्ण नहीं है। यद्यपि वे सामाजिक–राजनीतिक समस्याओं के निदान तथा समाधान का दावा करती है।
- राजनीतिक विचारधारा को ''सामाजिक परिवर्तन तथा सामाजिक नियंत्रण का साधना भी माना जाता है। यदि समाजवाद, साम्यवाद तथा मार्क्सवाद की विचारधाराएं, राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था के सम्पूर्ण परिवर्तन का माध्यम मानी जाती है तो सर्वाधिकारवादी विचारधाराएं (फांसीवाद, नाजीवाद) सामाजिक नियंत्रक का साधन हैं।
- विचारधारा का उदय विकास और उत्कर्ष सामाजिक पर्यावरण की प्रकृति के अनुरूप होता है। वस्तुतः की सामाजिक चेतना विचारधारा का प्रमुख स्रोत होती है। अब्राहम लिंकन, नेपोलियन बनोपार्ट, मैजिनी, टालस्टाय, वी.डी. सावरकर, महात्मागांधी, जवाहरलाल नेहरू, नेल्सन मण्डेला, आदि जननेताओं ने अपने व्यक्तित्व तथा कृतिव से राजनीतिक विचारधाराओं के जन्म में ऐतिहासिक भूमिका प्रस्तुत की है।

द्वितीय विश्वयुद्ध मि. राष्ट्रों और धुरी राष्ट्रों के मध्य लोकतंत्र बनाम अधिनायकवादी विचारधारा के संघर्ष का प्रतीक था, परंतु पूंजीवाद बनाम साम्यवादी विचारधारा के मध्य संघर्ष ने सारे विश्व को लपेट लिया। दोनों विचारधाराएं–एक दूसरे की पूरक हैं।

पूंजीवाद में उत्पादन के साधनों पर व्यक्ति का स्वामित्व रहता है, जबकि साम्यवादी विचारधारा उत्पादन के साधनों पर राज्य के स्वामित्व पर बल देती है। पूंजीवाद के अनुसार साम्यवादी अर्थव्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति दास के समान हो जाती है। आर्थिक उत्पादन के लिए प्रेरणा के अभाव में अर्थव्यवस्था में सुधार नहीं हो पाता है। साम्यवादी विचारधारा के अनुसार पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में पूंजीपति अपने लाभ के लिए श्रमिकों का शोषण करते हैं तथा राज्य पूंजीपतियों के हितों की रक्षा हेतु एक यंत के रूप में कार्य करता है।

भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के कालखड में गोखले के नेतृत्व में उदार राष्ट्रीयता तथा तिलक के नेतृत्व में उग्र राष्ट्रीयता के बीच गहरा विवाद चलता रहा। इसी प्रकार आजादी प्राप्त करने के लिए कांग्रेस के नेतृत्व में संवैधानिक साधनों तथा क्रांतिकारियों के क्रांति–चिंतन तथा क्रांति–कर्म के बीच वैचारिक संघर्ष चलता रहा। वी.डी. सावरकर बन्धुओं, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, हरदयाल आदि क्रांतिकारियों ने महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा तथा नैतिक साधनों पर आधारित सत्याग्रह की राजनीति का प्रबल विरोध किया था।

- सर्वाधिकारवादी राजनीतिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक विचारधारा पर विशेष बल दिया जाता है, यही उनका प्रमुख लक्षण होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका अथवा पश्चिम के उदारवादी लोकतंत्रों में विचारधाराओं की भूमिका कम स्पष्ट दिखाई देती हैं, क्योंकि उदारवादी लोकतंत्र का बहुलवाद सर्वाधिकारवादी राज्यों में विचारधारास द्वारा अनुशंसित सामाजिक व्यवहार को स्वीकार नहीं करता है।
- राजनीतिक यथार्थ के संदर्भ में विचारधारा की कठोरता में संशोधन करना पड़ता हैं जैसे, स्टालिन ने विश्वव्यापी साम्यवादी क्रांति के सिद्धांत को ठुकरा कर 'एक देश में समाजवाद' के सिद्धान्त को स्वीकार किया। इसी प्रकार उसने 'राज्य के धीरे–धीरे लोप हो जाने' के साम्यवादी सिद्धांत को भी इस आधार पर अस्वीकृत कर दिया कि सोवियत संघ चारों तरफ से पूंजीवादी देशों से घिरा हुआ है। अतः सोवियत संघ में राज्य के लोप होने की संभावना नहीं है।
- राजनीतिक और आर्थिक प्रक्रिया में भ्रष्ट या अक्षम भूमिका के कारण विचारधारा में आमूल परिवर्तन करना पड़ता है, अन्यथा विचारधारा की मृत्यु हो सकती है।

सन् 1917 में लेनि और बोल्शेविकों की विजय के बाद मार्क्सवाद–लेनिनवाद सोवियत संघ का शासकीय राजनीतिक सिद्धान्त बन गया था, परंतु 1990–91 में पूर्वी यूरोप में मार्क्सवाद के महल का विध्वंस हो गया और अन्ततः 1991 में मार्क्सवाद–लेनिनवाद का वैचारिक तथा शक्ति केन्द्र सोवियत संघ भी टूट गया। मार्क्सवाद जैसी ठोस और सशक्त राजनैतिक विचारधारा के पतन के अनेक कारण हो सकते हैं। इस संदर्भ में प्रमुख तर्क यह

है कि मार्क्सवाद अपनी रूढ़िगत व्याख्या के कारण न तो सोवियत अर्थव्यवस्था को सुधार सका और न विश्व अर्थव्यवस्था में परिवर्तनों के अनुरूप स्वयं को संशोधित कर सका। मार्क्सवाद–लैनिनवाद के पतन से यह सिद्ध हो गया कि किसी भी देश की राष्ट्रीय एकता–अखण्डता का एकमात्र आधार कोई विचारधारा नहीं हो सकती है।

- राजनैतिक विचारधाराओं के पास अपने प्रतीक, पुराण और विशिष्ट नायक होते हैं और सब विचारधाराओं का स्वर अनिवार्यतः नैतिक होता है।'' जैसे, साम्यवाद के पैगम्बर मार्क्स और एंजिल्स है उसके नायक लेनिन, स्टालिन, माओ, ख्रुश्चेच, ब्रझनेव आदि हैं तीा उसके पुराण 'दास केपिटल' और 'साम्यवादी घोषणापत्र' (1848) हैं श्रम की प्रधानता देने वाला 'हंसिया तथा हथोड़ा' उसका प्रतीक है।
- प्रकृति के आधार पर राजनीतिक विचारधाराओं का वर्गीकरण निम्नलिखित युग्मों में किया जा सकता हैः
- आदर्शवादी बनाम यथार्थवादी या आनुभविक विचारधारा,
- उदारवादी बनाम अनुदारवादी विचारधारा,
- लोकतंत्र बनाम सर्वाधिकारवादी विचारधारा,
- पूंजीवाद बनाम समाजवाद एवं साम्यवाद,
- संवैधानिक बनाम क्रांतिकारी विचारधारा आदि।
- उदारवादी लोकतंत्रों तथा औद्योगिक दृष्टि से विकसित देशों में विचारधारा संबंधी प्रतिबद्धता न्यूनतम पाई जाती है। अब यह कहा जाने लगा है कि ''विचारधारा के युग का अंत हो गया। प्रमुख समस्या विचारधारा की नहीं, बल्कि आर्थिक–औद्योगिक तकनीकी उन्नति त्था प्रबंध की है।

इस प्रकार राष्ट्रीय जीवनधारा में विचारधारा का महत्व अवश्य होता है। लोकतांत्रिक तथा सर्वाधिकारवादी राज्यों में उनकी प्रकृति भिन्न–भिन्न होती है। प्रकृति की भिन्नता के कारण विचारधाराओं में परस्पर संघर्ष पाया जाता है।

निष्कर्ष :

इस प्रकार राजनीतिक विचारधाराओं के उदय और विकास में राजनीतिक विचारकों के चिंतन, जननेताओं के प्रचलित सामाजिक–राजनीतिक संरचनाओं के बारे में विचार और महान धार्मिक तथा लौकिक ग्रंथों में निहित उपदेश आदि की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

संदर्भ सूची :

1. "For the past two centuries, the western world has been living through a time of troubles, that might well be called : The Age of Ideologies." -M. Watkins
2. Idologies prevailed in ancient times also but it was only in recent times that the term ideology came into wide currency. In modern times, ideologies have been able to inspire mas-movements."-C.B. Macpherson, Democratic Theory: Essays in Retrieval (Clarendon Press, Oxford, 1974) P.-158.
3. Preston King, An Ideological Fallacy in Politics and Experience (1968), p. 341.
4. एलेन बाल, आधुनिक राजनीतिक और शासन (मैकमिलन, दिल्ली, १९७१), पृ. २५५.
5. एलेन बाल, आधुनिक राजनीति और शासन पृ. २६०.
6. "Political thought begins with the Greeks its origin is connected with the calm and dear rationalism of the Greek mind."- Barker, Greek Political Theory.
7. डॉ. बी.एल. फड़िया और डॉ. पुखराज जैन, आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत, पृ. ३५५.
8. डॉ. बी.एल. फड़िया और डॉ. पुखराज जैन, आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत, पृ. ३५७.